चित्र : अराधना, कक्षा–4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, अजबपुर खुर्द

भाषा समृद्ध माहौल और सीखना

– मीना मेहरा

भाषा समृद्ध माहौल भाषा सीखने में बहुत मददगार होता है। पढ़ने-लिखने के विविध अवसर मिलते हैं। बच्चों में पढ़ने का, बोलने का और लिखने का आत्मविश्वास बढ़ता है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेलाघाट में मेरी नियुक्ति 2009 में हुई। मुझे लगता है कि व्यक्तिगत रूप से स्वयं को अपडेट रखने के साथ–साथ शैक्षिक रूप से भी अपडेट रखना होगा। मेरी कोशिश यह रहती है कि कक्षा की दीवारें खाली–खाली व नीरस न रहें। कक्षा भरी–पूरी व सुसज्जित लगे। अवकाश के दिनों में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की कार्यशालाओं एवं वी.टी.एफ. बैठकों में प्रतिभाग करती रही हूं। इन बैठकों में अपने अन्य साथियों द्वारा भी पढ़ना सिखाने को लेकर कुछ प्रयास साझा होते रहे हैं। विद्यालय में अपने सहयोगियों के बीच इस विषय पर चर्चा की। इस पर सहमति बनायी कि हम सब सभी कक्षाओं में कुछ सामग्री रखेंगे जो भाषा सीखने में सहायक हो। इसके अतिरिक्त विद्यालय में एक कक्ष में पुस्तकालय बनाने की बात हुई। बच्चों को पढ़ने के लिए विद्यालय के एक कक्ष में पुस्तकालय बनाया गया। इसे एक्टिविटी सेंटर (गतिविधि केंद्र) का रूप दिया गया। वर्तमान में विभाग की ओर से रीडिंग कार्नर हेतु बजट भी आया। किताबें पहले से भी मौजूद थी। 2500 रुपये की और किताबें मंगवाई गयीं ताकि बच्चे पढ़ने के साथ–साथ कुछ अन्य गतिविधियां भी कर सकें। इस कक्ष में बच्चों का बाल साहित्य की पुस्तकें, सादा कागज, कलर, पेंसिलें, पुराने अखबार, बच्चों द्वारा बनायीं गयी खिलौने, कवितायें आदि शामिल हैं। बैठने के लिए एक ग्रीन मैट बिछायी गयी है।

समय का निर्धारण

विचार को क्रियान्वयन में लाने के लिए जरूरी है सबकी सहमति बनायी जाय। अपने लिए कुछ नियम बनाये जाए और इस पर कुछ दिन अमल किया जाए। इसके लिए यह तय किया गया कि प्रतिदिन एक घंटा पढ़ने का समय निर्धारित हो। सभी लोग प्रतिदिन पढ़ने का समय दें। खुद भी कुछ पढ़ें। हम सभी साथी एक पीरियड प्रतिदिन पढ़ने के लिए समय देते हैं।

भाषा समृद्ध माहौल

भाषा सीखने के लिए जरूरी है कि बच्चों को माहौल दिया जाय। कक्षा में कविता/कहानियों के पोस्टर लगे

हों। मैंने एकलव्य से मंगाया गया पोस्टर लगाया। बच्चों द्वारा लिखी गयी कहानियों व कविताओं के पोस्टर भी लगाये। कुछ चित्रों को भी लगाया। बच्चों का जन्मदिन मनाते हैं तो कार्ड की लड़ी बनाकर कक्षाओं में टांगा ताकि याद रहे कब किसका जन्मदिन हैं। इसके साथ–साथ बच्चे भी इस पर लिखे नाम जन्मदिन आदि को पढ़ते रहें। कक्षा में लगे पोस्टर को बच्चे बीच–बीच में पढ़ते रहते हैं। प्रिंट के अलावा भाषाई कौशल विकास के लिए कक्षा में माहौल भी बनाना पड़ता है।

बच्चों के साथ काम

केवल पोस्टर आदि लगा भर देने से कुछ नहीं होता। जब तक इसके उद्देश्यों को समझा न जाय। इस पर लग कर कुछ काम न किया जाय। इस सत्र से एन.सी.ई.आर.टी की पाठ्यपुस्तकें लग गयी हैं। जैसा हम सभी सोचते हैं इसमें पर्याप्त अभ्यासकार्य दिया गया। इससे मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त किताब पढ़कर सुनाना, अधूरी कविता कहानी को पूरा करने आदि का काम कक्षा में करवाया जाता है। एक उदाहरण के रूप में एक दिन का अनुभव रखना चाहती हूं। एक कक्षा में छुपन–छुपाई कहानी की किताब बच्चों को पढ़ कर सुनाई। यह कहानी ऐसी है कि सब बच्चे इस कहानी से परिचित हैं। यानि इस खेल को खेलते आये हैं। जैसे ही कहानी समाप्त हुई वैसे ही बच्चे बोल पड़े कि मैम इसे हम खेलते हैं। पूछा गया कि इस तरह के और कौन–कौन से खेल खेलते हो। बच्चे खेलों के नाम बोलते गए मैं बोर्ड इन खेलों के नाम लिखती गयी–

- सम्पोलिया
- आंख मिचौली कड़वा तेल
- धप्पा
- सितारा
- पीड्डू
- गेंद मुच्ची
- धप्पी
- चिप्पी
- आइप–पाइस
- बर्फ–पानी आदि।

स्थानीय खेलों पर बातचीत करने का मेरा उद्देश्य होता है कि बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास हो। साथ में यह अंदाज लगाकर पढ़ पायें कि जो बोल रहे हैं वही बोर्ड पर लिखा जा रहा है। बच्चे को इस बात का एहसास हो कि जो मैं बोल रहा हूं वह महत्वपूर्ण है। उनकी विचारों/अभिव्यक्ति का कक्षा में सम्मान मिल रहा है। इससे हर बच्चा बोलने को उत्सुक होता है। दूसरी बात जब चीजें उनके अनुभव से जुड़ी होती हैं तो ज्यादा आत्मविश्वास के साथ बोल पाते हैं। जब मैंने पूछा कि छुपन–छुपाई कैसे खेलते हो? बच्चों ने बताया कि 'एक बच्चा आंखे बंद करता है। बाकी बच्चे छुप जाते हैं। फिर पूछा कि कहां छिप जाते हो ? किसी ने कहा दीवार के पीछे, किसी ने कहा– दीदी के पीछे,दरवाजे के पीछे,पेड़ के पीछे आदि।

इसके बाद कुछ और किताबें पढ़ने को दो। पढ़ने में जो बच्चे पढ़ना नहीं जानते हैं वे केवल चित्र देख रहे थे। कुछ अंदाज से जीत व बबली, मदन आदि शब्द को पढ़ रहे थे क्योंकि इस तरह के पात्र या कहें कि इस तरह के नाम और भी कहानियों में थे तो उनको शब्दों पकड़ने में आसानी हो रही थी।

इसके बाद चित्र बनाने का काम दिया। चित्र में तबला, पिपनी, आम, पेड़ आदि के चित्र बनाना शुरू किये। जिसके पास जो किताबें मौजूद थीं उसके अनुसार बनाने की कोशिश कर रहे थे।

मैंने महसूस किया कि भाषा समृद्ध माहौल भाषा सीखने में बहुत मददगार है। पढ़ने–लिखने के विविध अवसर मिलते हैं। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है। पढ़ने का, बोलने का और लिखने का। यहीं हम सब चाहते हैं। बच्चा समझ के साथ पढ़ पाए और लिख पाए। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को अवसर दिया जाय। उन्हें प्यार दिया जाय यानि उनकी भावनाओं, विचारों को सुना जाय। भाषा केवल बताने की, रटाने की चीज नहीं है। भाषा के जरिये हम अपनी बात कहते हैं, दूसरों की बात समझते हैं। कक्षा में इस तरह भाषा समृद्ध माहौल से बच्चों को समझ कर पढ़ने–लिखने और बोलने के अवसर मिलते हैं।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मेलाघाट में सहायक अध्यापिका हैं)